2nd International Conference on "Recent Research Development in Environment, Social Sciences and Humanities"
Indian Federation of United Nations Associations, New Delhi (India) (ICRRDESH)
6th August 2017, www.conferenceworld.in ISBN: 978-93-86171-40-5

प्राचीन भारतीय इतिहास की सभ्यता एवं विस्तार

कृष्ण पंवार

M.A. History, UGC NET

सार

भारत दक्षिण एशिया में एक देश है जिसका नाम सिंधु नदी से आता है । भारत का नाम अपने संविधान में प्राचीन पौराणिक सम्राट भरत के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है, जिसका उल्लेख, भारतीय महाकाव्य महाभारत में किया गया है। पुराणों (5वीं शताब्दी में लिखी गई धार्मिक / ऐतिहासिक ग्रंथों) के लेखन के अनुसार, भरत ने भारत के पूरे उप.महाद्वीप पर कब्जा कर लिया और शांति और सामंजस्य से समस्त भाग पर शासन किया। इस भूमि को भारतवर्षा (`भरत के उपमहाद्वीप') के नाम से जाना जाता था। भारतीय उपमहाद्वीप सबसे पुराने बसे हुए क्षेत्रों में से एक है।

परिचय

वर्तमान भारत, पाकिस्तान और नेपाल के क्षेत्रों ने पुरातत्वविदों और विद्वानों को सबसे पुरानी वंशावली के सबसे अमीर स्थलों के रूप में प्रदान किया है। प्रजाति होमो हेडल्बेल्बेर्जेसिस (एक आधुनिक मानव जो आधुनिक होमो सेपियन्स का पूर्वज था) सदियों पहले मनुष्यों के यूरोप जाने से पहले भारत के उप-महाद्वीप में रहते थे । Homo heidelbergensis के अस्तित्व का सबूत 1907 में जर्मनी में पहली बार खोजा गया था, और आगे की खोजों ने अफ्रीका से बाहर इस प्रजाति के काफी स्पष्ट प्रवास पैटर्न स्थापित किए हैं। प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी के साधनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है - साहित्यिक साधन और पुरातात्विक साधन, जो देशी और विदेशी दोनों हैं। साहित्यिक साधन दो प्रकार के हैं -धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य। धार्मिक साहित्य भी दो प्रकार के हैं -ब्राह्मण ग्रन्थ और अब्राह्मण ग्रन्थ। ब्राह्मण ग्रन्थ दो प्रकार के हैं - श्रुति जिसमें वेद ब्राह्मण उपनिषद इत्यादि आते हैं और स्मृति जिसके अन्तर्गत रामायण महाभारत पुराण स्मृतियाँ आदि आती हैं। लौकिक साहित्य भी चार प्रकार के हैं - ऐतिहासिक साहित्य विदेशी विवरण, जीवनी और कल्पना प्रधान तथा गल्प साहित्य।

प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के प्रमुख साधन साहित्यिक ग्रन्थ हैं जिन्हें दो उपखण्डों में रखा जा सकता है - धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य।

ISBN: 978-93-86171-40-5

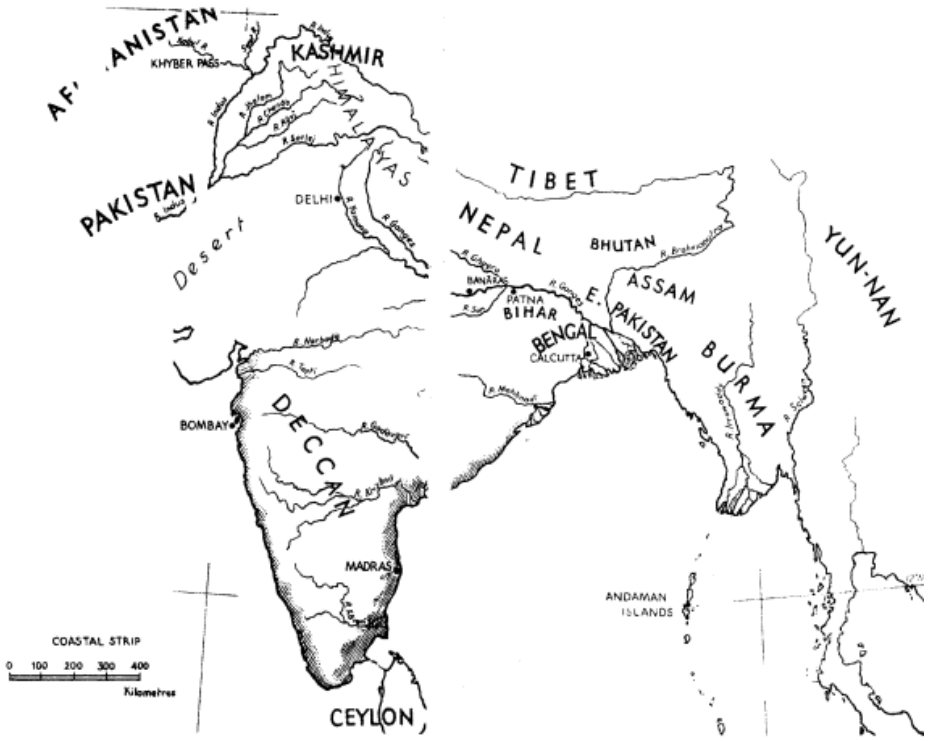

प्राचीन भारत का विस्तार

भारत के प्राचीन युग

पाषाण युग

पाषाण युग से तात्पर्य ऐसे काल से है जब लोग पत्थरों पर आश्रित थे। पत्थर के औज़ार, पत्थर की गुफ़ा ही उनके जीवन के प्रमुख आधार थे। यह मानव सभ्यता के आरंभिक काल में से है जब मानव आज की तरह विकसित नहीं था। इस काल में मानव प्राकृतिक आपादाओं से जूझता रहता था और शिकार तथा कन्द-मूल फल खाकर अपना बसर करता था।

पुरापाषाण युग

हिमयुग का अधिकांश भाग पुरापाषाण काल में बीता है। भारतीय पुरापाषाण युग को औजारों, जलवायु परिवर्तनों के आधार पर तीन भागों में बांटा जाता है -

- **आरंभिक या निम्न पुरापाषाण युग** (25,00,000 **ई. पूर्व** - 100,000 **ई. पू.**)
- **मध्य पुरापाषाण युग** (1,00,000 **ई. पू.** - 40,000 **ई. पू.**)
- **उच्च पुरापाषाण युग** (40,000 **ई.पू** -10,000 **ई.पू.**)

आदिम मानव के जीवाश्म भारत में नहीं मिले हैं। महाराष्ट्र के बोरी नामक स्थान पर मिले तथ्यों से अन्देशा होता है कि मानव की उत्पत्ति 14 **लाख वर्ष पूर्व हुई होगी। हँलांकि यह बात लगभग सर्वमान्य है कि अफ़्रीका की अपेक्षा भारत में मानव बाद में बसे। यद्दपि यहां के लोगों का पाषाण कौशल लगभग उसी तरह विकसित हुआ जिस तरह अफ़्रीका में। इस समय का मानव अपना भोजन कठिनाई से ही बटोर पाता था। वह ना तो खेती करना जानता था और ना ही घर बनाना। यह अवस्था** 9000 **ई.पू. तक रही होगी।**

पुरापाषाण काल के औजार छोटानागपुर के पठार में मिले हैं जो 1,00,000 **ई.पू. तक हो सकते हैं। आंध्र प्रदेश के कुर्नूल जिले में** 20,000 **ई.पू. से** 10,000 **ई.पू. के मध्य के औजार मिले हैं। इनके साथ हड्डी के उपकरण और पशुओं के अवशेष भी मिले हैं। उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर जिले की बेलन घाटी में जो पशुओं के अवशेष मिले हैं उनसे ज्ञात होता है कि बकरी,**

भैंड़, गाय, भैंस इत्यादि पाले जाते थे। फिर भी पुरापाषाण युग की आदिम अवस्था का मानव शिकार और खाद्य संग्रह पर जीता था। पुराणों में केवल फल और कन्द मूल खाकर जीने वालों का जिक्र है। इस तरह के कुछ लोग तो आधुनिक काल तक पर्वतों और गुफाओं में रहते आए हैं।

नवपाषाण युग

भारत मे नवपाषाण युग के अवशेष सम्भवता 6000 इसा पुर्व से 1000 इसा पुर्व के है, विकास कि यह अवधि भारतीय उपमहाद्वीप मे कुछ देर से आयी, क्योकि ऐसा माना जाता है कि विश्व के बडे भुभाग (south west Asia) मे यह युग 8000-7000 इसा पुर्व के आसपास पनपा, यहाँ से नील वैली (इजिप्ट) होते हुए यूरोप पंहुचा। इस युग मे मानव पत्थर कि बनी हाथ कि कुलहाडिया आदि औजार पतथर को छिल घीस और चमकाकर तैयार करता था, उत्तरी भारत मे नवपाषाण युग का स्थल बुर्जहोम (कशमीर) मे पाया गया है भारत मे नव पाषाण काल के प्रमुख चार स्थल है।

ताम्र पाषाण युग

नवपाषाण युग का अन्त होते होते धातुओं का प्रयोग शुरू हो गया था। ताम्र पाषाणिक युग में तांबा तथा प्रस्तर के हथियार ही प्रयुक्त होते थे। इस समय तक लोहा या कांसे का प्रयोग आरम्भ नहीं हुआ था। भारत में ताम्र पाषाण युग की बस्तियां दक्षिण पूर्वीराजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण पूर्वी भारत में पाई गई है।

सिंधु घाटी सभ्यता

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक इतिहासकारों की यह मान्यता थी कि वैदिक सभ्यता भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता है। परन्तु सर दयाराम साहनी के नेतृत्व में १९२१ में जब हड़प्पा (पंजाब के मान्टगोमरी जिले में स्थित) की खुदाई हुई तब इस बात का पता चला कि भारत की सबसे पुरानी सभ्यता वैदिक नहीं वरन सिन्धु घाटी की सभ्यता है। अगले साल अर्थात १९२२ में राखालदास बनर्जी के नेतृत्व में मोहनजोदड़ो (सिन्ध के लरकाना जिले में स्थित) की खुदाई हुई। हड़प्पा टीले के बारे में सबसे पहले चार्ल्स मैसन ने १९२६ में उल्लेख किया था। मोहनजोदड़ो को सिन्धी भाषा में मृतकों का टीला कहा जाता है। १९२२ में राखालदास बनर्जी ने और इसके बाद 1922 से 1930 तक सर जॉन मार्शल के निर्देशन में यहां उत्खनन कार्य करवाया गया।

उत्पत्ति

इतनी विस्तृत सभ्यता होने के बावजूद भी इसकी उत्पत्ति को लेकर आज भी विद्वानों में मतैक्य का अभाव है। इसकी सबसे बड़ी बजह यह है कि हड़प्पा संस्कृति के जितने भी स्थलों की अब तक खुदाई हुई है वहां सभ्यता के विकास अनुक्रम का चिन्ह स्पष्ट नही मिलता है अर्थात इस सभ्यता के अवशेष जहां कहीं भी मिले हैं अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में ही मिले हैं।

सर जॉन मार्शल, गार्डन चाईल्ड, मार्टीमर व्हीलर आदि इतिहासकारों की मान्यता है कि हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति में विदेशी तत्व का हाथ रहा है। इन इतिहासकारों का मानना है कि हड़प्पा की उत्पत्ति मेसोपोटामिया की शाखा सुमेरिया की सभ्यता की प्रेरणा से हुई है। इन दोनो सभ्यताओं में कुछ समानताएं भी देखने को मिलती है जो इस प्रकार है –

- (1) दोनो ही सभ्यता नागरीय है।
- (2) दोनो ही सभ्यताओं के निवासी कांसे और तांबे के साथ साथ पाषाण के लघु उपकरणों का प्रयोग करते थे।
- (3) दोनों ही सभ्यताओं के भवन निर्माण में कच्चे और पक्के दोनो ही प्रकार के ईंटों का प्रयोग हुआ है।
- (4) दोनो ही सभ्यता
- (5) दोनो को लिपि का ज्ञान था।

इन्ही समानताओं के आधार पर व्हीलर ने सैन्धव सभ्यता को सुमेरियन सभ्यता का एक उपनिवेश बताया था। लेकिन इन समानताओं के बावजूद कुछ ऐसी असमानताएं भी हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। हड़प्पा सभ्यता की नगर

योजना सुमेरिया की सभ्यता से अधिक सुव्यवस्थित है। दोनो ही सभ्यताओं आम उपयोग की चीजें काफी भिन्न हैं जैसे बर्तन, उपकरण, मूर्तियां, मुहरें आदि। फिर दोनों ही सभ्यताओं के लिपि में भी अंतर है। जहां सुमेरियाई लिपि में 900 अक्षर हैं वहीं सिन्धु लिपि में केवल 400 अक्षर हैं। इन विभिन्नताओं के होते हुए दोनो सभ्यताओं को समान मानना समुचित नहीं लगता।

प्राचीन भारत की वैदिक एवं धार्मिक सभ्यता

वैदिक सभ्यता

इस काल में आर्यों का आगमन हुआ, वे युरोपिय थे। ऐसा कुछ पश्चिमी विद्वानों का मत है। तथा पश्चिम में यह सिद्धांत अब भी प्रचलित है। बाद में मुइर जैसे विद्वानों ने यह मान लिया कि यह अप्रमाणिक है क्योंकि इसके प्रमाण नहीं मिले। अतः वेदों का लेखनकाल 4000 वर्ष पूर्व के आसपास का माना जाने लगा जो हिन्दू तर्कसंगत भी है। ऋग्वैदिक काल के बाद भारत में धीरे धीरे सभ्यता का स्वरूप बदलता गया। परवर्ती सभ्यता को उत्तरवैदिक सभ्यता कहा जाता है। उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था और कठोर रूप से पारिभाषित तथा व्यावहारिक हो गई। ईसी पूर्व छठी सदी में, इस कारण, बौद्ध और जैन धर्मों का उदय हुआ। अशोक जैसे सम्राट ने बौद्ध धर्म के प्रचार में बहुत योगदान दिया। इसके कारण बौद्ध धर्म भारत से बाहर अफ़ग़ानिस्तान तथा बाद में चीन और जापान पहुंच गया। अशोक के पुत्र ने श्रीलंका में भी बौद्ध धर्म का प्रचार किया। गुप्त वंशके दौरान भारत की वैदिक सभ्यता अपने स्वर्णयुग में पहुंच गई। कालिदास जैसे लेखकों ने संस्कृत की श्रेष्ठतम रचनाएं कीं।

धार्मिक सभ्यता

ईसा पूर्व छठी सदी तक वैदिक कर्मकांडों की परंपरा का अनुपालन कम हो गया था। उपनिषद ने जीवन की आधारभूत समस्या के बारे में स्वाधीनता प्रदान कर दिया था। इसके फलस्वरूप कई धार्मिक पंथों तथा संप्रदायों की स्थापना हुई। उस समय ऐसे किसी 62 सम्प्रदायों के बार में जानकारी मिलती है। लेकिन इनमें से केवल 2 ने भारतीय जनमानस को लम्बे समय तक प्रभावित किया - जैन और बौद्ध।

जैन धर्म पहले से ही विद्यमान था। दोनो श्रमण संस्कृति पर आधारित है। वैदिको ने श्रमण संस्कृति को बाद मे उपनिषदो मे अपनाया।

जैन धर्म

जैन धर्म के दो तीर्थकरों - ऋषभनाथ तथा अरिष्टनेमि- का उल्लेख ऋग्वेद में पाया जाता है। कुच विद्वानों का मत है कि हड़प्पा की खुदाई में जो नग्न धड़ की मूर्ति मिली है वो किसी तीर्थकर की है। पार्श्वनाथ तेइसवें तीर्थकर तथा भगवान महावीर चौबीसवें तीर्थकर थे। वर्धमान महावीर जो कि जैनों के सबसे प्रमुख तथा अन्तिम तीर्थकर थे, का जन्म 540 ईसापूर्व के आसपास वैशाली के पास कुंडग्राम में हुआ था। 42 वर्ष की अवस्था में उन्हें कैवल्य (परम ज्ञान) प्राप्त हुआ।

महावीर ने पार्श्वनाथ के चार सिद्धांतों को स्वीकार किया -अहिंसा - जीव हत्या न करना

- अमृषा - झूठ न बोलना
- अस्तेय - चोरी न करना
- अपरिग्रह - सम्पत्ति इकट्ठा न करना

इसके अतिरिक्त उन्होंने अपना पांचवा सिद्धांत भी अपने उपदेशों में जोड़ा -

- ब्रह्मचर्य - इंद्रियों पर नियंत्रण

इस सम्प्रदाय के दो अंग हैं - श्वेताबर तथा दिगंबर

बौद्ध धर्म

जैन धर्म की तरह इसका मूल भी एक उच्चवर्गीय क्षत्रिय परिवार से था। गौतम नाम से जन्में महात्मा बुद्ध का जन्म 566 ईसापूर्व में शाक्यकुल के राजा शुद्धोदन के घर हुआ था। इन्होने भी सांसारिक जीवन जीने के बाद एक दिन (या रात) अचानक से अपना गार्हस्थ छोड़कर सत्य की खोज में चल पड़े।

बुद्ध के उपदेशों में चार आर्य सत्य समाहित हैं -

- दुख
- दुख समुद्दय
- दुख निरोध
- दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा।

उन्होंने अष्टांगिक मार्ग का सुझाव दिया जिसका पालन करके मनुष्य पुनर्जन्म के बंधन से दूर हो सकता है -

- सम्यक वाक्
- सम्यक कर्मांत्
- सम्यक आजीव
- सम्यक व्यायाम
- सम्यक स्मृति
- सम्यक समाधि
- सम्यक संकल्प
- सम्यक दृष्टि

बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत के बाहर भी हुआ। अफ़ग़ानिस्तान (उस समय फ़ारसी शासकों के अधीन), चीन, जापान तथा श्रीलंका के अतिरिक्त इसने दक्षिण पूर्व एशिया में भी अपनी पहचान बनाई।

References

[1]. ओम प्रकाश प्रसाद, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (गूगल पुस्तक)

[2]. शिव स्वरूप सहाय, प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास (गूगल पुस्तक)

[3]. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार (गूगल पुस्तक)

[4]. लेखक - आर सी मजुमदार ; अनुवादक - शिवदान सिंह चौहान, श्रेण्य युग ('क्लासिकल एज' का हिन्दी अनुवाद)

[5]. भारतीय इतिहास के कुछ विषय (Archaeology & Ancient India), लेखक - रघुनाथ राय

[6]. प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास, लेखक - धनपति पाण्डेय

[7]. लेखक - राधाकुमुद मुखर्जी, हिन्दू सभ्यता, पुस्तक